

अतिभावुकता से बचें

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भाव में प्रवाहित हो जाना, अन्तःकरण में करुणा की भावना प्रवाहित होना अतिभावुकता है। जिसके भीरत प्रेम और मैत्री की धारा प्रवाहित होती है वह अतिभावुक होता है। करुणा अच्छी है। व्यवहार जगत में सामान्यतः मनुष्य पशु पक्षी रहते हैं, लेकिन इसी जगत में ठगने का प्रयास करते हैं। कुछ लोग अच्छे होने का नाटक करते हैं, गूंगे बहरे होने का अनुकरण कर लोगों को छलते हैं। अनेक प्रकार के नाटक कर लोगों को धोखा देते हैं। ऐसे नाटकबाजों से बचना चाहिए। पैसा कमाकर, पैसा प्राप्त कर शराब, बीड़ी और नशा करते हैं। हमारे जीवन में ऐसे अनेक लोग होते हैं जो इस तरह के कार्य करके संसार में लोगों को धोखा देते हैं। भगवान् महावीर वैशाली के राजकुमार थे। करुणा से आप्लावित होकर उन्होंने संन्यास का मार्ग ग्रहण किया। पशुबलि के घृणित कार्य से उनका हृदय विदीर्ण हो गया। इसलिए उन्होंने समाज में व्याप्त कुरुतियों को दूर करने का बीणा उठाया और मानवता को उपदेश दिया। महात्मा बुद्ध ने शव यात्रा, वृद्धों की स्थिति को देखकर यह निष्कर्ष निकाला कि यह संसार दुःख पूर्ण है। दुःख का कारण अविद्या है। बिना अविद्या को दूर किये अज्ञान को दूर किये बिना सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है। इसके लिए उन्होंने चार आर्य सत्य का उपदेश दिया। युवाओं और बच्चों के लिए यह शिक्षा आवश्यक है। तन, मन, धन से मानवता की सेवा करनी चाहिए। धर्म की आराधना करनी चाहिए। धर्म की शरण लेनी चाहिए। सच्चा धर्म अहिंसा है। प्राणियों की तीन करण और तीन योग से हिंसा नहीं करनी चाहिए। संयम का पालन करना चाहिए। किसी भी प्राणी के प्रति कष्ट देने का भाव हमारे भीतर नहीं होना चाहिए। आचार—विचार, व्यवहार, व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करना चाहिए। सभी के प्रति रचनात्मक भाव रखना चाहिए। नकारात्मक भाव किसी के प्रति नहीं रखना चाहिए। शुभचिन्तन करना चाहिए। प्रतिक्रिया विरति होनी चाहिए। शुभस्वरूप में अवस्थित होना चाहिए। वसुधैव कुटुम्बकम् की बात धारण करनी चाहिए। नैतिक मूल्यों का विकास करना चाहिए।

आत्म स्वातन्त्र्य मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट संपदा है। व्यक्ति अपने आप में एक विचार जगत लेकर चलता है, उसकी प्रवृत्तियाँ निरन्तर विचारों से प्रभावित होती हैं। परापेक्षा और परनिर्भरता कुछ ऐसी मानसिक कमजोरियाँ हैं जो प्रायः आम व्यक्ति में पाई जाती हैं। व्यक्ति पर निर्भर होकर एक विलक्षण निश्चिंतता का अनुभव करता है। सादगी का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के मन में अपने आपको "जो वह है उससे भी अधिक श्रेष्ठ और प्रशंसनीय" दिखाई देने का भाव विद्यमान रहता है। यह भाव इतना श्रेष्ठ और व्यापक होता है कि इसको समाप्त कर देना अत्यंत दुष्कर होता है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं, सबसे बड़ा कारण तो यह है कि प्रारंभिक स्तर पर इसे कोई बुरा भाव नहीं समझा जाता। इतना ही नहीं अधिकतर तो इस भाव को चारों तरफ से प्रशंसा ही मिलती है, इसका परिणाम यह होता है कि भाव व्यक्ति के मन में दिनों-दिन प्रगाढ़ होता जाता है और इतना अधिक फैल जाता है कि जिसे प्रारंभ में अच्छाई समझा गया वह भोंडा प्रदर्शन मात्र बनकर रह जाता है। प्रदर्शनेच्छा से अभिभूत मानव अपने खान-पान, पहनावे से लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जहाँ तक की पारस्परिक व्यवहारों में भी एक नाटक ही करता रहता है, उसकी सारी बुद्धि केवल एक बात की तरफ केन्द्रित हो जाती है कि वह अच्छा कैसे दिखाई दे। व्यक्ति अपने आप में कैसा भी है वह उसकी वास्तविकता है। जब वास्तविकता को छुपाकर केवल दिखावा करने की प्रवृत्ति चल पड़ती है तो यह एक ऐसी प्रवृत्ति है कि उसका अंत ही कठिन हो जाता है। इनमें कोई संदेह नहीं कि मानव ने अपने रहन-सहन और व्यवहारों की नग्नता को ओट देने के लिए एक सभ्यता का निर्माण किया है। सभ्यता के लोक व्यापी प्रतिमान होते हैं और उन प्रतिमानों की सुरक्षा करना प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो जाता है।

सभ्यता के प्रतिमानों की सुरक्षा को हम प्रदर्शन नहीं कह सकते। प्रदर्शन रूप प्रतिमान वे होते हैं जिनमें सभ्यता के भाव मुख्य नहीं होकर प्रदर्शन के भाव तीव्र होते हैं। अपने ठाठ-पाट वैभव और देह को अन्य व्यक्तियों के सामने अलंकृत करके प्रस्तुत करना वह प्रदर्शन है जिसे आम व्यक्ति साश्चर्य देखा करे और उस तरफ आकर्षित हो, किन्तु यथार्थ में वह भव्यता जो दिखाई देती है, होती नहीं है। जीवन की गतिविधि में जो सरल सहज शास्त्रोक्त है, वह

उपादेय है ही। उसे हम आडम्बर नहीं कह सकते, किन्तु जो स्वोपज्ञ आचार है तथा जिन आचार बिन्दुओं को आज कि स्थिति में हम नहीं पाल सकते, उन्हें विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हुए सहज शुद्ध जीवन जीना ही वास्तविक विचार—दर्शन है, जो व्यक्ति को आत्म शांति प्रदान करता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। नैतिक मूल्यों में करुणा, त्याग, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि मूल्यों का समावेश है, जिनका पालन करने से जीवन में शांति प्राप्त होती है। करुणा मानवीय संवेदना का एक ऐसा भाव है जिसमें मानव का हृदय विगलित होता चला जाता है। करुणा भाव भी मानव को अभिभूत कर देता है। उसकी उत्प्रेरणा भी बहुत प्रबल होती है। करुणा भाव किसी राग भाव का अंग नहीं होकर एक स्वतंत्र आत्म भाव है। राग भाव किसी परिचित या चिरपरिचित के साथ ही हो पाता है किन्तु करुणा भाव के लिए कोई शर्त नहीं है।